8

Jh lDr

ऋग्वेद में उल्लेखित श्री सूक्त में केवल भौतिक सम्पदा वैभव की ही बात नही कही गयी है बल्कि बाह्य और आंतरिक श्री (सम्पन्नता) की भी बात कही गयी है, परंतु समय के साथ इसे देवी लक्ष्मी, जो कि नारायण की भार्या है, और सम्पूर्ण समृद्धि पर जिनका अधिकार है, को सौभाग्य लक्ष्मी उपनिषत्, लक्ष्मी तेग आदि में सिद्धान्त रूप से देवी के रूप में छायांकित किया गया है।

ऋग्वेद में उल्लेखित श्री सूक्त का मुख्य तात्पर्य है न्यूनता का नहीं होना, अल्पता का न होना, विरलता का न होना अर्थात् किसी प्रकार की आवश्यकता की कमी का न होना।

"श्री" शब्द की संकल्पना को समझने के लिए हमें उपयुक्त बातों के आधार पर श्री सूक्त के भावार्थ को समझना है। क्योंकि इसको व्युत्पति परम रूप से देखें तो इन शब्दों की सूचना और विकास हमें सूक्त के तीसरे मंत्र में मिलता है।

mís';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्री सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- श्री सूक्त का संक्षेप में भावार्थ लिख पाने में ।

8.1 Jh lDr

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥

oṁ hiraṇyavarṇāṁ hariṇīṁ suvarṇa rajata-srajām |

candrāṁ hiraṇ-mayīṁ lakṣmīṁ jātavedo ma āvaha || 1 ||

हे देवों के प्रतिनिधि अग्निदेव! आप मुझे सुवर्ण की तरह पीतवर्ण वाली तथा किंचित हरितवर्ण वाली तथा हरिणी रूपधारिणी, सुवर्ण मिश्रित रजत की माला धारण करने वाली, रजत के समान धवल पुष्पों की माला धारण करने वाली, चंद्रमा के सदृश प्रकाशमान तथा चंद्रमा की

तरह इस जगत् को प्रसन्न करने वाली या चंचला की तरह रूपवाली, हिरण्मयी ही जैसे गुणों से यक्त लक्ष्मी जी को मेरे अम्युदम के लिए बुलाओ।

तां म॒ आव॑ह॒ जात॑वेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॓म् ।

यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गामश्वं॒ पुरु॑षान॒हम् ॥२॥

tāṁ ma̱ āva̍ha̱ jāta̍-vedo la̱kṣmīm ana̍pagā̱minī̎m |

yasyā̱ṁ hira̍ṇyaṁ vi̱ndeya̱ṁ gāmaśva̱ṁ puru̍ṣān a̱ham || 2 ||

हे जातवेदा अग्निदेव! आप उन जगत प्रसिद्ध अविनाशी लक्ष्मी जी को मेरे लिए बुलाओ जिनका आह्वान करने पर मुझे सुवर्ण, गौ, अश्व और पुत्र–पोत्रादि, सेवक आदि की प्रप्ति हो।

अ॒श्वपू॒र्वां र॑थम॒ध्यां ह॒स्तिना॓द-प्र॒बोधि॑नीम् ।

श्रियं॓ दे॒वीमुप॑ह्वये॒ श्रीर्मा॓ दे॒वीर्जु॑षताम् ॥३॥

a̱śva̱-pū̱rvāṁ ra̍tha-ma̱dhyā̱ṁ ha̱sti-nā̍da pra̱bodhi̍nīm |

śrīya̍ṁ de̱vīm upa̍hvaye̱ śrīr-mā̍ de̱vī ju̍ṣatām || 3 ||

जिस देवी के सम्मुख घोड़े रथ से जुते हुए हैं, ऐसे रथ में बैठी हुई, हाथियो के नाद की भव्यता से जिनके आगमन का भास होता है ऐसी लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूँ। दीप्यमान तथा सबकी आश्रयदाता लक्ष्मी आप मेरे यहाँ आओ और निवास करो।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

kāṃ sŏsmitāṁ hiráṇya prākārām ārdrāṁ jvalántīṁ tṛptāṁ tarpayántīm |

padme sthitāṁ padma-várṇāṁ tām ihopáhvaye śrīyam || 4 ||

जिसका स्वरूप अवर्णनीय (वाणी और मन का विषय न होने के कारण) है तथा जो मंद मधुर हास्यायुक्ता हैं, जो सुवर्णमयी हैं एवं देदीप्यमान हैं। स्वयं पूर्णकाम है तथा उपासकों के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाली हैं। कमल के ऊपर विराजमान, कमल के सदृश मनोहर लक्ष्मी जी को मैं आह्वान करता हूँ।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

candrāṁ prábhāsāṁ yaśasā jvalántīṁ śriyáṁ loke deva júṣṭām udārām |

tāṁ padminīmīṁ śaráṇam ahaṁ prapádye'lakṣmīr mé naśyatāṁ tvāṁ vṛṇe || 5 ||

चंद्रमा के समान कान्तिवाली , अपने यश (कीर्ति) से देदीप्यमान, स्वर्ग लोक में इन्द्रादि देवों से पूजिता, अत्यंत दानशीला, कमल के मध्य निवासीनी, सबकी उपकारक एवं आश्रय देने वाली, जगत् प्रसिद्ध उन लक्ष्मी को मैं प्राप्त करता हूँ। अतः मैं तुम्हारा की परण करता हूँ। अर्थात् आश्रय लेता हूँ।

आ॒दि॒त्यव॑र्णे॒ तप॒सोऽधि॑जा॒तो वन॒स्पति॒स्तव॑ वृ॒क्षोऽथ बि॒ल्वः ।
तस्य॒ फला॑नि॒ तप॒सा नु॑दन्तु मा॒यान्त॑रा॒याश्च॑ बा॒ह्या अ॑ल॒क्ष्मीः ॥६॥

āditya várṇe tapaso'dhijāto vanaspatis tavá vṛkṣo'tha bilvaḥ |
tasya phalā́ni tapasā núdantu māyāntárā yāśca bāhyā álakṣmīḥ || 6 ||

हे सूर्य के समान कांति वाली, आपके तेजोमय प्रकाश से बिना एक विशेष वृक्ष उत्पन्न हुआ। तदन्तर आपके हाथ से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ। उस बिल्ववृक्ष का फल मेरे बाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार की दरिद्रता को नष्ट करें।

उपै॑तु॒ मां दे॑वस॒खः की॒र्तिश्च॒ मणि॑ना स॒ह ।
प्रा॒दु॒र्भू॒तोऽस्मि॑ रा॒ष्ट्रेऽस्मिन् की॒र्तिमृ॑द्धिं द॒दातु॑ मे ॥७॥

upaitu māṁ déva-sakhaḥ kīrtiśca maṇinā saha |
prādurbhūto'smi rāṣṭre'smin kīrtim ṛddhiṁ dadātu me || 7 ||

हे लक्ष्मी ! देवसखा अर्थात् देवतओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो। मैं अग्निदेव की उपासना करूँ। एवं मणि के साथ अर्थात् चिंतामणि के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति मुझे यश प्राप्त हो अर्थात् धन और यश दोनों ही मुझे प्राप्त हों। मैं इस संसार में उत्पन्न हुआ हूँ , अतः हे लक्ष्मी आप मुझे यश और सम्पूर्ण एश्वय प्रदान करें।

क्षुत्पि॑पा॒साम॑लां ज्ये॒ष्ठाम॑ल॒क्ष्मीं ना॑शया॒म्यहम् ।

अभू॑ति॒मस॑मृद्धिं॒ च सर्वा॒ं निर्णु॑द मे॒ गृहा॑त् ॥८॥

kṣut-pi̍pā̲sāṁ ma̍lāṁ jye̲ṣṭhām a̍la̲kṣmīṁ na̍śayā̲myaham |

abhū̍ti̲m asa̍mṛddhi̲ṁ ca sarvā̲n nirṇu̍da me̲ gṛhā̍t || 8 ||

क्षुधा एवं पियासा रूप मल को धारण करने वाली एवं लक्ष्मी की ज्येष्ठा दरिद्रता का मैं नाश करता हूँ अर्थात दूर करता हूँ। हे लक्ष्मी! आप मेरे घर में सम्पन्नता तथा सम्पदा वृद्धि के प्रति आने वाले विघ्नों को दूर कीजिये।

ग॒न्ध॒द्वा॒रां दु॑रा॒ध॒र्षां नि॒त्यपु॑ष्टां करी॒षिणी॑म् ।

ई॒श्वरीं॑ सर्व॑भूता॒नां ता॒मि॒होप॑ह्वये॒ श्रियम् ॥९॥

ga̲ndha̲-dvā̲rāṁ du̍rādha̲rṣā̲ṁ ni̲tya pu̍ṣṭāṁ karī̲ṣiṇī̍m |

ī̲śvarīgu̍ṁ sarva̍ bhūtā̲nā̲ṁ tām i̲hopa̍hvaye̲ śriyam || 9 ||

सुगन्धित पुष्प के अर्पण से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी न दबने योग्य। धन धान्य आदि सम्पन्नता देकर गौ–अश्वादि पशुओं की समृद्धि प्रदात्री, जगत् के समस्त प्राणियों की स्वामिनी उस जगत् प्रसिद्ध श्री लक्ष्मी को मैं अपने घर परिवार (राष्ट्र) मैं सादर बुलाता हूँ।।

मन॑स॒ः काम॒माकू॑तिं वा॒चः स॒त्यम॑शीमहि ।

प॒शू॒नां रू॒पमन्न॑स्य॒ मयि॒ श्रीः श्र॑यतां॒ यश॑ः ॥१०॥

mana̍sa̲ḥ kāma̲m ākū̍tiṁ vā̲cas sa̲tyam a̍śīmahi |

pa̲śū̲nāguṁ rū̲pam-a̍nnasya̲ mayi̲ śrīś śra̍yatā̲ṁ yaśa̍ḥ || 10 ||

हे लक्ष्मी ! आपके प्रभाव से मेरे मानसिक इच्छा एवं सभी संकल्प पूरे हों। वाणी की सत्यता,गौ – आदि पशुओ के रूप एवं अन्नों क सभी प्रकार (भोजनादि) सभी पदार्थो को प्राप्त हों। मुझ सम्पति और यश मिले।

कर्दमेंन प्रंजाभूता मयि सम्भंव कर्दम ।

श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिंनीम् ॥११॥

kardaména prájā-bhūtā mayi saṁbháva kardama |

śriyáṁ vāsayá me kule mātaráṁ padma mālinīm || 11 ||

"कर्दम" नामक ऋषि – पुत्र से लक्ष्मी पुत्रवाली हुई है। हे कर्दम! तुम मुझमें, मेरे यहाँ अच्छी प्रकार से निवास करो। हे कर्दम ! माला धारण करने वाली संपूर्ण संसार की मत लक्ष्मी माता मेरे घर में निवास करें।

आपंः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वसं मे गृहे ।

नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले ॥१२॥

āpás srjantú snigdhāni ciklīta vása me gṛhe |

nicá devīṁ mātaraggaś śriyáṁ vāsayá me kule || 12 ||

वरुण देवता स्निग्ध (मनोहर) पदार्थो को उत्पन्न करें। लक्ष्मी के आनंद, कर्दम ,चिक्लीत और श्रित –ये चार पुत्र हैं। इनमे "चिक्लीत" से प्रार्थना की जा रही है। हे चिक्लीत (लक्ष्मी पुत्र) ! तुम मेरे गृह में निवास करो। आपके साथ दिव्यगुण युक्त सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

आ॒र्द्रां पु॒ष्करि॑णीं पु॒ष्टिं पि॒ङ्ग॒लां प॑द्ममा॒लिनीम् ।

च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह ॥१३॥

a̱rdrāṁ pu̱ṣkariṇīṁ pu̱ṣṭi̱ṁ su̱va̱rṇāṁ héma ma̱linīm |

su̱ryāṁ hi̱raṇmayīṁ lakṣmīṁ jātávedo ma̱ āváha || 13 ||

हे अग्निदेव ! तुम मेरे घर में पुष्करिणी (दिग्गजों) हाथियों के सूंडाग्रा से अभिषिच्यमाना (आद्र शारीर वाली), पुष्टिरूपा रक्त और पीतवर्णवाली, कमल पुष्प कि माला धारण करने वाली, जगत् को प्रकाशमान करने वाली प्रकाश स्वरुप लक्ष्मी को बुलाओ।

आ॒र्द्रां य॒ः करि॑णीं य॒ष्टिं सु॒व॒र्णां हे॑ममा॒लिनीम् ।

सू॒र्यां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं॒ जात॑वेदो म॒ आव॑ह ॥१४॥

a̱rdrāṁ ya̱ḥ kariṇīṁ ya̱ṣṭi̱ṁ pi̱ṅgalāṁ pádma ma̱linīm |

ca̱ndrāṁ hi̱raṇmáyīṁ lakṣmīṁ jātávedo ma̱ āváha || 14 ||

हे अग्निदेव ! तुम समस्त उपासक जिसकी याचना करते हैं, दुष्टों को दंड देने वाली (यष्टिवत् अवलंबनीया), सुन्दर वर्ण वाली सुवर्ण कि माला वाली सूर्यरूपा, अतः प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

तां म॒ आव॑ह॒ जात॑वेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म् ।

यस्यां॒ हिर॑ण्यं॒ प्रभू॑तं॒ गावो॑ दा॒स्योऽश्वा॑न्, वि॒न्देयं॒ पुरु॑षान॒हम् ॥१५॥

tāṁ ma̱ āváha̱ jātávedo la̱kṣmīm ánapaga̱minīm |

yasya̱ṁ hiraṇya̱ṁ prabhūta̱ṁ gāvó da̱syo'śvān vi̱ndeya̱ṁ puruṣān a̱ham || 15 ||

हे अग्निदेव ! तुम जगत् प्रसिद्ध लक्ष्मी को जो मुझे छोड़कर अन्यत्र न

जाने वाली हो को, बुलाओ। उन लक्ष्मी की कृपा से मैं सुवर्ण, ऐश्वर्य, गौ, दासी, अश्व और पुत्र –पौत्रादि को प्राप्त करूँ।

य: शुचि: प्रयतोभूत्वा जुहुयाादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्च च श्रीकाम: सततं जपेत् ॥१६॥

yaś śuci̱ḥ prayáto bhū̱tvā ju̱huyā́d ājya̱m anváham |
sūktáṁ pa̱ñca dáśarca̱ṁ ca śrī̱ kāmá sata̱taṁ jápet || 16 ||

जो जन लक्ष्मी की कामना करता हो, वह पवित्र और पूर्णभाव से प्रतिदिन अग्नि में गौघृत का हवन करे और साथ ही श्रीसूक्त कि पंद्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करें।

पद्मानने पद्मउरू पद्माक्षि पद्मसंभवे।
तन्मे भजसि पद्मक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥१७॥

padmá-priye padmini padma̱-haste padmā́laye padma-dalāyátākṣi |
viśvá-priye̱ viṣṇu manó'nukū̱le tvat pā́da pa̱dmam mayi̱ sannidhatsva || 17 ||

हे! कमल जैसे आनन वाली देवी लक्ष्मी, और जिन्हें कमल के पुष्प पसंद है, जो अपने हाथो में कमल धारण करती है और जिनके हृदय कमल मे बसता है, जो संपूर्ण जगत जिनकी कामना करता है और जिन्हें विष्णु स्वीकार करते है ऐसी देवी लक्ष्मी के चरण–कमल हमेशा ही मेरे मन (चिंतन) के विषय हैं।

ॐ म॒हा॒दे॒व्यै च॑ वि॒द्महे॑ विष्णुप॒त्न्यै च॑ धीमहि ।

तन्नो॑ लक्ष्मीः प्रचो॒दया॑त् ॥

ॐ शान्ति॒ः शान्ति॒ः शान्ति॑ः ॥

Oṁ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

शांति की स्थापना हो। शांति का स्थापना हो। शांति की स्थापना हो।

ikBxr iz'u& 8-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. .... हरि॑णीं सु॒वर्ण॑रज॒तस्र॑जाम् ।
2. अ॒श्व॒पू॒र्वां .... ह॒स्तिना॑द-प्र॒बोधि॑नीम् ।
3. प॒द्मे स्थि॑तां प॒द्मव॑र्णां ता॒मि॒होप॑ह्वये .... ॥
4. आ॒दि॒त्यव॑र्णे .... वन॒स्पति॒स्तव॑ वृ॒क्षोऽथ बि॒ल्वः ।
5. क्षुत्पि॑पा॒साम॑लां .... नांशया॒म्यहम् ।

vkius D;k lh[kk

- श्री सूक्त का शुद्ध उच्चारण करना।
- श्री सूक्त का भावार्थ।

ikBkr iz'u

1. श्री सूक्त का महत्त्व लिखिए।

mÙkjekyk

8.1

(1)

1. हिरण्यवर्णां
2. रथमध्यां
3. श्रियम्
4. तपसोऽधिजातो
5. ज्येष्ठामलक्ष्मीं